अभ्यास पत्रक

पाठ – रहीम के दोहे

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. दोहा पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥"

1. रहीम प्रेम की तुलना किससे करते हैं और क्यों?

उत्तर - .....

2. 'गाँठ परि जाय' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर - .....

3. इस दोहे में हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर - .....

2. कथन और कारण पर आधारित प्रश्न (Assertion-Reason) – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** रहीम प्रेम संबंधों को अत्यंत मूल्यवान मानते हैं।
   कारण: प्रेम संबंध टूटने पर उन्हें पहले जैसा बनाना असंभव होता है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** रहीम के दोहे सरल भाषा में होते हैं।
   कारण: उनके दोहों में केवल अलंकारिक शैली होती है, भाव नहीं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (5x1=5 अंक)

6. 'बिगरी बात बनै नहीं' – रहीम इस दोहे में क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर - .....
.....

7. रहीम ने जल पंक के जल को क्यों धन्य कहा है?

उत्तर - .....
.....

8. 'रहिमन देखि बड़ेन को' – में कवि क्या सिखा रहे हैं?

उत्तर - .....
.....

9. 'दीर्घ दोहा अरथ के' – पंक्ति का क्या अर्थ है?

उत्तर - .....
.....

eGyanarchive

10. रहीम के अनुसार मन की पीड़ा को किससे साझा करना चाहिए?

उत्तर - .....

.....

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. 'एकै साधे सब सधै' दोहे का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

12. रहीम ने अपने दोहों में सामाजिक व्यवहार को किस रूप में प्रस्तुत किया है?

उत्तर - .....

.....

.....

13. रहीम के दोहे छोटे होते हुए भी प्रभावशाली क्यों हैं?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. रहीम के दोहों में नैतिकता और व्यवहारिकता का अद्भुत समन्वय है – इस कथन की पुष्टि पाठ के आधार पर कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "संत कवि रहीम की दोहात्मक शैली और सामाजिक चेतना" – विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तर कुंजी

1. प्रेम की तुलना नाजुक धागे से करते हैं क्योंकि दोनों जल्दी टूट सकते हैं।
2. रिश्तों में एक बार टूटन आने के बाद जोड़ने पर गाँठ पड़ जाती है।
3. हमें प्रेम संबंधों को समझदारी और संवेदनशीलता से निभाना चाहिए।
4. (क)
5. (ग)
6. यदि कोई बात या संबंध बिगड़ जाए तो उसे सुधारना कठिन होता है, इसलिए सोच-समझकर व्यवहार करना चाहिए।
7. क्योंकि वह जल छोटे जीवों की प्यास बुझाता है, जबकि समुद्र का पानी उपयोगी नहीं होता।
8. हमें छोटी वस्तुओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए क्योंकि हर वस्तु की अपनी उपयोगिता होती है।
9. रहीम के दोहे शब्दों में छोटे हैं पर उनका अर्थ बहुत गहरा और महत्वपूर्ण होता है।
10. किसी से नहीं – मन की पीड़ा मन में ही रखनी चाहिए।
11. एक लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने से अन्य कार्य स्वतः सिद्ध हो जाते हैं, जैसे जड़ को सींचने से पूरा पेड़ फलता-फूलता है।
12. उन्होंने दोहों में जीवन की गहराई, संबंधों की मर्यादा और नैतिकता को सहज रूप में प्रस्तुत किया है।
13. क्योंकि वे थोड़े शब्दों में गहरी और व्यावहारिक बात कह देते हैं जो पाठकों के हृदय तक पहुँचती है।
14. रहीम के दोहे जीवन के व्यावहारिक अनुभवों से उपजे हैं। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से समाज को नैतिकता, विनम्रता, संयम, आत्मसम्मान, समय का सदुपयोग और प्रेम जैसे मूल्यों की शिक्षा दी। जैसे – "रहिमन धागा प्रेम का" दोहे में प्रेम को टूटने से बचाने की सलाह दी गई है, वहीं "रहिमन देखि बड़ेन को" में विनम्रता का महत्व बताया गया है। रहीम के दोहे ना केवल काव्य सौंदर्य से युक्त हैं, बल्कि उनमें व्यवहारिक बोध और शिक्षात्मक तत्व भी मौजूद हैं। उनका हर दोहा जीवन के किसी न किसी पहलू को दर्शाता है और पाठक को सोचने पर विवश करता है।
15. रहीम हिंदी साहित्य के उन संत कवियों में हैं जिन्होंने दोहों के माध्यम से समाज को शिक्षाप्रद संदेश दिए। उनकी रचनाओं में भक्ति, नैतिकता और व्यवहारिक जीवन-दृष्टि का सुंदर समन्वय मिलता है। रहीम के दोहे सीधे-सपाट होते हैं, लेकिन उनका प्रभाव गहरा होता है। वे प्रेम, करुणा, संवेदना, सहनशीलता, विनम्रता और आत्मनियंत्रण की बात करते हैं। “बिगरी बात बनै नहीं”, “रहिमन निज मन की बिथा”, जैसे दोहे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। रहीम सामाजिक विषमताओं को उजागर करते हुए समानता और सहयोग की भावना को बल देते हैं। उन्होंने शब्दों की किफायत में जीवन के गूढ़ रहस्यों को उजागर किया। उनकी शैली सादगी से भरपूर है, परंतु विचारों की दृष्टि से समृद्ध और चेतनापूर्ण। रहीम का साहित्य आज भी समाज को जीवन के उच्च मूल्यों की शिक्षा देता है, इसलिए वह केवल कवि नहीं, एक मार्गदर्शक संत हैं।